श्री लगिाष्टकम
ब्रह्ममुरारसिुरार्चति लगिं नर्मिलभाषतिशोभति लगिं |
जन्मजदुःखवनिाशक लगिं तत्प्रणमामि सदाशवि लगिं ॥ १

मैं उन सदाशवि लगिं को प्रणाम करता हूँ जनिकी ब्रह्मा, वष्णिु एवं देवताओं द्वारा अर्चना की जाति है, जो सदैव नर्मिल भाषाओं द्वारा पुजति हैं तथा जो लगिं जन्म-मृत्यू के चक्र का वनिाश करता है (मोक्ष प्रदान करता है)

देवमुनप्रिवरार्चति लगिं, कामदहं करुणाकर लगिं|
रावणदर्पवनिाशन लगिं तत्प्रणमामि सदाशवि लगिं ॥ २

देवताओं और मुनयिों द्वारा पुजति लगिं, जो काम का दमन करता है तथा करूणामयं शवि का स्वरूप है, जसिने रावण के अभमिान का भी नाश कयिा, उन सदाशवि लगिं को मैं प्रणाम करता हूँ।

सर्वसुगंन्धसिुलेपति लगिं, बुद्धविवर्धिनकारण लगिं|
सद्धिसुरासुरवन्दति लगिं, तत्प्रणमामि सदाशवि लगिं ॥ ३

सभी प्रकार के सुगंधति पदार्थों द्वारा सुलेपति लगिं, जो कि बुद्धि का वकिास करने वाल है तथा, सद्धि- सुर (देवताओं) एवं असुरों सबों के लए वन्दति है, उन सदाशवि लकिं को प्रणाम।

कनकमहामणभिूषति लगिं, फणपितवेष्टतिशोभति लगिं|
दक्षसुयज्ञवनिाशन लगिं, तत्प्रणमामि सदाशवि लगिं ॥ ४

स्वर्ण एवं महामणयिों से वभिूषति, एवं सर्पों के स्वामी से शोभति सदाशवि लगिं जो कि दक्ष के यज्ञ का वनिाश करने वाल है ; आपको प्रणाम।

कुंकुमचंदनलेपति लगिं, पंङ्कजहारसुशोभति लगिं|
संञ्चतिपापवनिाशनि लगिं, तत्प्रणमामि सदाशवि लगिं ॥ ५

कुंकुम एवं चन्दन से शोभायमान, कमल हार से शोभायमान सदाशवि लगिं जो कि सारे संञ्चति पापों से मुक्ति प्रदान करने वाला है, उन सदाशवि लगिं को प्रणाम ।

देवगणार्चतिसेवति लगिं, भवैर्भक्तभिरिवेच लगिं|
दनिकरकोटप्रिभाकर लगिं, तत्प्रणमामि सदाशवि लगिं ॥ ६

आप सदाशवि लगिं को प्रणाम जो कि सभी देवों एवं गणों द्वारा शुद्ध वचिार एवं भावों द्वारा पुजति है तथा जो करोडों सूर्य सामान प्रकाशति हैं।

अष्टदलोपरवेष्टति लगिं, सर्वसमुद्भवकारण लगिं|
अष्टदरद्रिवनिाशति लगिं, तत्प्रणमामि सदाशवि लगिं ॥ ७

आठों दलों में मान्य, एवं आठों प्रकार के दरद्रिता का नाश करने वाले सदाशवि लगिं सभी प्रकार के सृजन के परम कारण हैं – आप सदाशवि लगिं को प्रणाम।

सुरगुरूसुरवरपूजति लगिं, सुरवनपुष्पसदार्चति लगिं|
परात्परं परमात्मक लगिं, ततप्रणमामि सदाशवि लगिं||

दवताओं एवं देव गुरू द्वारा स्वर्ग के वाटिका के पुष्पों से पुजति परमात्मा स्वरूप जो कि सभी व्याख्याओं से परे है – उन सदाशवि लगि को प्रणाम।